3

प्रमुख रचयिताओं की जीवनियाँ

कर्नाटक संगीत कई सदियों से होते हुए महान कला रूप की भांति विकसित हुआ है। हमारे संगीत के विकास में प्रतिभाशाली रचयिताओं का महत्त्वपूर्ण योगदान है। महान रचयिताओं ने उपयुक्त धुनों और लयों से युक्त सुंदर भाषा में गीत बनाये जिनसे संगीतज्ञों ने संगीत सभाओं की शोभा बढ़ाई। मूल गीत स्थिर थे जबकि तत्क्षण संगीत में परिवर्तन होता रहा। इन्हें कृति या कीर्तन कहते हैं जो सामान्यतया देवताओं की प्रशंसा में राग के आकार या रूप में रचे गये। इन गीतों के रचयिताओं को वग्गेयकार (वाक्य-गेय-कार, जिसका अर्थ है शब्द- संगीत-उत्पादक) कहते हैं। इस अध्याय में हम इनमें से कुछ संगीत रचयिताओं, उनके जीवन और कार्य का अध्ययन करेंगे। जिन रचयिताओं के विषय में हम जानकारी प्राप्त करेंगे वे हैं पुरंदर दास, भद्रचल रामदास, संगीत त्रिमूर्ति, स्वाति तिरुनल और पपनसम सीवन।

उद्देश्य

इस पाठ का अध्ययन करने के पश्चात विद्यार्थी:

- रचयिता को पहचानकर उनके नाम बता पायेगा;
- कुछ गीतों के रचयिताओं को पहचान पायेगा;
- प्रसिद्ध (सूचिबद्ध) रचयिताओं के योगदान का विवरण दे पायेगा;
- उनके गीत की पृष्ठभूमि और महत्त्व का वर्णन कर पायेगा;
- संगीत और रचयिता को उचित संदर्भ में रख पायेगा;
- रचनाओं के ज्ञान का विकास कर पायेगा।

3.1 पुरंदर दास

पुरंदर दास (1484-1564) का जन्म एक धनाढ्य व्यापारी, वरदप्पा के यहां श्रीनिवास नायक

टिप्पणी

के नाम से पुरंदरगर्दा (महाराष्ट्र) में हुआ। वे भली-भांति शिक्षित तथा कन्नड़, संस्कृत और आध्यात्मिक संगीत में पारंगत थे। उनकी पत्नी, सरस्वती बाई बहुत धार्मिक थीं। वे एक साहुकार बन गये और नव कोटि नारायण के नाम से जाने जाते थे। वे एक बहुत ही कृपण मनुष्य थे परंतु जब एक ब्राह्मण ने उन्हें सरस्वती बाई की नथ ला कर दी जो उन्हें दान में मिली थी फिर भी उनकी पत्नी के पास ही थी, तो वे सुधर गये। वे अपना धन और लोभ छोड़कर एक चारण बन गये और घूम-घूम कर धर्म और दान का उपदेश गाते हुए देते थे। विजयनगर राज्य में बहुत घूम कर ईश्वर की प्रशंसा करके अच्छे व्यवहार और सद्गुण की शिक्षा देते हुए उनकी 80 वर्ष की आयु में हंपी में मृत्यु हो गई। जब वे 40 वर्ष के थे तो व्यासतीर्थ ने उन्हें पुरंदर दास नाम देकर दीक्षित किया।

उन्हें संगीत पितामह- संगीत के पितामह- के रूप में जाना जाता है। उन्होंने मायामालवगौल राग, जिसका हम अनुकरण करते हैं, के आधार पर संगीत शिक्षण को व्यवस्थित किया। उन्होंने सरली, जनतई, वरीसई, अलंकार, गीत, उगभोग, सूलादि और कीर्तन रचे। प्राय: बोलचाल की भाषा, दैनिक जीवन की समीक्षा और लोक धुनों को काम में लेते हुए उनके गीत 'देवरनं' कहलाते हैं, जिन्हें वे करताल की ताल और तंत्री वाद्य के साथ गाते थे। सरल धुन और लय में बद्ध, वे भक्ति, नैतिकता और करुणा का उपदेश देते हैं। इनमें गजेंद्र मोक्ष, प्रहलाद आदि धार्मिक ग्रंथ तथा कथाओं के कई प्रसंग अनेक चरणं सहित सरल धुनों में मिलते हैं। उनके गीतों के माध्यम से हम उन्हें सामान्य मनुष्य की भांति दृश्य, ध्वनि, भोजन और उनके अनुभवों का आनंद लेते हुए देखते हैं। उदाहरण के लिये उन्होंने पयसं, बीज, पौधा, पुष्प, फूल आदि शब्दों का प्रयोग किया है। कहा जाता है की उन्होंने 475000 गीतों की रचना की है जिनमें से 1000 उपलब्ध हैं। ये कन्नड़ भाषा में हैं, जबकि इनके हस्ताक्षर (मुद्रा) पुरंदर विठ्ठल हैं। उनके कई शिष्य थे जिन्होंने उनके संगीत का प्रचार किया।

पाठगत प्रश्न 3.1

1. पुरंदर दास का आरंभिक नाम क्या था?
2. उनकी रचनायें क्या कहलाती हैं?
3. उन्होंने कौनसी भाषा में गीतों की रचना की?
4. उनकी संगीतात्मक मुद्रा क्या थी?

3.2 भद्रचल रामदास

भद्रचल रामदास (1620-1688) तेलुगू भाषी थे तथा उनका एक धार्मिक युगल लिंगन्ना और

कामंबा के यहां जन्म हुआ था, जो नलकोंडपल्ली गांव में रहते थे। उनका नाम गोपन्ना रखा गया। एक शांत बालक जो सदा रामनाम गाता था, उन्होंने अपना सारा धन अकाल और सूखे के समय जरूरतमंदों में बांट दिया। किंवदंती के अनुसार एक मुस्लिम फकीर ने उन्हें रामनाम में दीक्षित किया तथा उन्हें रामदास नाम दिया। उनके क्षेत्र के शासक अबु हसन कुतुबशाह (तनीष) थे जिनके लिये गोपन्ना के चाचा अकन्न और मदन्न ने राजधानी गोलकोण्डा में मुख्य मंत्रियों की भांति काम किया। उनकी सहायता से इन्हें भद्रचल, एक प्रसिद्ध पवित्र नगर जहां पर राम के मंदिर की स्थिति अच्छी नहीं थी, में तहसीलदार का पद प्राप्त हुआ। रामदास दान एकत्र करते थे और राज कोष से भी कुछ धन लेकर मंदिर की मरम्मत करवाते थे। नवाब ने उन्हें गबन के आरोप में 12 वर्ष के लिये जेल भेज दिया। रामलक्ष्मण ने तनीष को सपने में यह बताया कि रामदास निर्दोष है और मंदिर की मरम्मत जनता की सेवा। रामदास को मुक्त कर दिया गया, उन्हें पेंशन और भद्रचल के पास का क्षेत्र मंदिर के रखरखाव के लिये दान में दे दिया गया। रामदास की पत्नी कमलांबा थीं और उनका पुत्र रघुराम था।

पुरंदर दास की भांति रामदास ने अपने आराध्य का वर्णन और उसकी आराधना के लिये सरल लोक धुनों और आसान भाषा का प्रयोग किया। उन्होंने गीतों को बहुत कठिन नहीं बनाया जिससे साधारण लोग उन्हें समझ सकें और सामुहिक भजनों के अंतर्गत गा सकें। उनके गीतों में रामनाम का बारंबार दोहराना और हस्ताक्षर 'भद्रचल' दिखाई देता है। वे मुख्यतया तेलुगु में हैं परंतु उनमें संस्त्रत के कई शब्द हैं। पुरंदर दास और रामदास दोनों ने बाद के कई रचयिताओं, विशेषतया त्यागराज, को प्रेरणा दी जो रामदास की भक्ति का अपनी रचनाओं में उल्लेख करते हैं। रामदास के कीर्तन पल्लवी और कई चरणं में बद्ध हैं और कांबोधी जैसी परिचित रागों और धुनों में रचे गये हैं। धुनों की तुलना में शब्दों पर अधिक जोर दिया गया है। दक्षिण भारत में संपूर्ण भजन मंडलियों में उनके गीत सम्मिलित होते हैं जो समूह गान के लिये पूर्ण रूप से उपयुक्त हैं।

पाठगत प्रश्न 3.2

1. रामदास की देशी भाषा क्या थी?
2. उनके गीतों में बार-बार किसका नाम आता है?
3. प्रसिद्ध राम मंदिर कहां था जिसकी उन्होंने मरम्मत करवाई?

3.3 संगीत त्रिमूर्ति

यह एक आश्चर्यजनक संयोग है कि कर्नाटक संगीत के तीन सबसे महान रचयिताओं ने तमिलनाडु

टिप्पणी

के एक ही नगर में प्राय: एक ही समय जन्म लिया। वह प्रसिद्ध नगर तिरुवरूर तंजौर जिले में है जहां इनका जन्म हुआ और वह सभी संगीत प्रेमियों के लिये तीर्थ स्थान है।

3.3.1 श्यामा शास्त्री– वरिष्ठतम– 26 अप्रैल 1762 में विश्वनाथ अय्यर, जो कांचीपुरम से आये हुए तेलुगु पुजारियों के वंशज थे, के यहां इनका जन्म हुआ। इनके पिता तुलजा के दरबार में कार्यरत थे। इनका नाम व्यंकटसुब्रमणियं रखा गया व इनकी पुजारी बनने के लिये शिक्षा हुई। एक संगीत सन्यासी ने इन्हें संगीत और संभवत: तांत्रिक उपासना (देवी पूजा) में दीक्षित किया। तत्पश्चात इनका संपर्क पच्चीमिरयं अदियपैया (वीरिबोनी के लिये प्रसिद्ध) से हुआ। इनके गीतों में सरल पद होते हैं परंतु उनका लय संतुलन जटिल होते हुए भी सुंदर होता है। इनकी लगभग 300 कृतियां उपलब्ध हैं जो अधिकतर तेलुगु में हैं जिनमें श्यामाकृष्ण हस्ताक्षर प्रयुक्त हुआ है। वे एक सरल और सुविधापूर्ण तरीके से रहने वाले गृहस्थ थे। उनके सबसे बड़े बेटे पंजु शास्त्री को उनके लेख और रचनायें विरासत में मिलीं। उनका छोटा बेटा सुब्बरय्या शास्त्री एक अच्छा रचयिता था। विदित होता है कि श्यामा शास्त्री ने अधिक यात्रा नहीं की क्योंकि वे अपने संगीत और उपासना में लीन रहते थे। अपनी पत्नी की मृत्यु का शोक मनाते हुए कुछ दिनों पश्चात 6 फरवरी 1827 में इनकी मृत्यु हो गयी।

3.3.2 त्यागराज– का जन्म 1767 में एक तेलुगु भाषी रामा ब्राह्मण के घर में हुआ जो अत्यंत प्रतिभाशाली माने जाते थे, रामायण पर प्रवचन देते थे तथा राम तारक मंत्र में दीक्षित थे। कथनानुसार उनके तीसरे पुत्र के जन्म की भविष्यवाणी तिरुवरूर के प्रमुख देव ने उनके माता पिता से की थी, जिन के नाम पर बालक का नाम त्यागराज रखा गया। तत्पश्चात पवित्र कावेरी नदी के किनारे तिरुवयुरु में तंजौर शासक द्वारा दिये गये घर में परिवार रहने लगा। ग्राम प्राकृतिक सौंदर्य से भरपूर है और त्यागराज ने अपनी कृतियों 'सारी वेदलिन' (आसावरी) और 'मुरीपेमु' (मुखारी) में इसका उल्लेख किया है। उनका पूर्ण ध्यान उपासना और ध्यान में होने के कारण त्यागराज के अपने सहोदरों के साथ संबंध अच्छे नहीं थे। उन्होंने पहले पार्वती से और उनकी मृत्यु के पश्चात कनकंबा से विवाह किया। इनकी इकलौती पुत्री सीतालक्ष्मी ने कुप्पुस्वामी से विवाह किया जिनके पुत्र त्यागराज की नि:संतान ही मृत्यु हो गयी। सन्यास लेने के पश्चात इस संत की मृत्यु 1847 में हुई।

त्यागराज संस्कृत, तेलुगु और ज्योतिष शास्त्र में शिक्षित एक महान योगी थे। उन्होंने प्रसिद्ध गायक सोंती व्यंकटरमनय्या से गायन और वीणा की शिक्षा ली। त्यागराज के गीतों में शास्त्रीय सौंदर्य, योगिक दृष्टि, भक्ति और संगीतात्मक निपुणता है। पुरंदर दास की भांति वे बिना सत्यनिष्ठ उपासना के केवल बाहरी धार्मिक कर्म कांडों के अनुसरण की आलोचना करते हैं। वे रामदास और पोतना के प्रशंसक थे। त्यागराज की कृतियों में अत्यंत विविधता है। हमें उनकी रचनाओं में सरल मेलडी, कोमल लय, पंचरत्न, भक्ति का

भावनात्मक प्रदर्शन, विस्त्रित विवरण, करुणा के लिये सरल निवेदन, ये सब मिलता है। उत्सव संप्रदाय और दिव्यनामा जैसे गीतों में विस्त्रित संगति सहित जटिल राग, लोक संगीत और भजन गीत, तीन ओपेरा- प्रहलाद भक्ति विजयम, नौका चरित्रम और श्री सीता राम विजयम उनकी प्रतिभा के प्रमाण हैं। यद्यपि अधिकतर गीत तेलुगु में हैं, कई संस्कृत में भी हैं। उनके ईष्ट देवता राम थे, परंतु वे गणेश, शिव, देवी इत्यादि के गीत उसी सहजता से गाते थे। संगीत और नाद पर उनके गीत उनकी कला के सिद्धांत और अभ्यास के विचारों को प्रदर्शित करते हैं। इस समूह के तीन रचयिताओं में से इनके गीतों में सबसे अधिक विविधता है। क्योंकि इनके बहुत शिष्य थे, इनका संगीत बहुत प्रसिद्ध और भविष्य के लिये सुरक्षित है।

आज तक इनकी शिष्य परंपरा से प्रतिभाशाली संगीतज्ञ हमें प्राप्त हैं।

3.3.3 मुत्तुस्वामी दीक्षितर (1775-1835)- तिरुवरूर के सुब्बम्मा और रामास्वामी दीक्षितर के पुत्र थे जो स्वयं एक पारंगत संगीतज्ञ थे और व्यंकट वैद्यनाथन द्वारा शिक्षित थे जिन्होंने स्वयं 17वीं शताब्दी के म्यूजिकोलोजिस्ट व्यंकटमखी के विद्यालय से शिक्षा प्राप्त की जिनकी परंपरा का उनके परिवार ने अनुकरण किया। रामास्वामी अपने परिवार के साथ मनाली (मद्रास के पास) चले गये जहां वे दरबारी संगीतज्ञ थे। एक संत चिदंबरनाथ योगी ने मुत्तुस्वामी को बनारस की तीर्थ यात्रा के समय अपना शिष्य बनाया, उन्होंने उत्तर भारत में कई स्थानों का भ्रमण किया और उन्होंने दर्शन शास्त्र, तंत्र और संस्व्रत का अध्ययन लगभग 9 वर्ष तक अध्ययन किया। दो विवाह करने पर भी इन्हें सांसारिक जीवन में दिलचस्पी नहीं थी। उन्होंने गुरुगुहा को अपना हस्ताक्षर प्रयुक्त करते हुए तिरुत्तनी मंदिर से आरंभ करते हुए कई देवताओं पर गीतों की रचना की। उनका संपूर्ण जीवन तीर्थयात्रा करते हुए 1835 की दीपावली के दिन एट्यापुरम में समाप्त हुआ। उनके सुंदर गीत देवताओं के नाम की माला की भांति तथा देव स्तुति लगभग मंत्रों की भांति होते हैं और संगीत की कोमल गमकों का प्रदर्शन उनके वीणा वादन की धीमी तथा सुंदर गति की झलक है। हमें उनके संगीत और भाषा का ज्ञान मध्यमकला साहित्य के विशेष प्रयोग के द्वारा पता चलता है जो धीमी गति वाली कृतियों से अलग दिखाई देता है। इन्होंने शास्त्रीय छंद, अनुप्रासों सहित कई अर्थों वाले वाक्यों या शब्दों का प्रयोग किया है, स्त्रोतोवह तथा गोपुच्छा यति का प्रगतिशील अधिक या कम उपयोग किया है, साथ ही रचनाओं में रागों के नाम एवं उनकी अपनी मुद्रा को गूंथा है जिससे वे छंदमय के स्थान पर साहित्यिक अधिक हैं। संगीतात्मक उपलब्धि के अतिरिक्त उनकी तीर्थ यात्राओं के मंदिर और देवताओं के वर्णन तथा विभक्ति कृति में संस्कृत वाक्यों का परिवर्तित रूप तथा व्याकरण के विभिन्न प्रकार दिखाई देते हैं। कृतियों का स्थल या देवता समूह, रागों के उप-समूह जिनके नामों के अंतिम भाग में समानता है, सहित व्यवस्थित करना, ये सब एक ऐसे व्यक्ति का परिचय देते हैं जो अपने सिद्धांतों को अभ्यास में लाने में परिपूर्ण और सुव्यवस्थित है।

वे अपने भाइयों चिन्नस्वामी और बालुस्वामी के अतिरिक्त एक अन्य शिष्यों के समूह से जुड़े थे जो बाद में तंजौर कौर्टेट के रूप में प्रसिद्ध हुआ। उन्होंने वायलिन के प्रयोग के अतिरिक्त उनकी ख्रतियों का प्रचार किया। दीक्षितर ने कुछ हिंदुस्तानी रागों का प्रयोग किया तथा कुछ सरल 'नोट्टुस्वर' के लिये पाश्चात्य मेलडी के समूह का भी प्रयोग किया। अपने संगीत के अभ्यास में पारंगत

होते हुए भी दीक्षितर और परिवार ने विभिन्न प्रकार के संगीत और संस्कृति से परस्पर आदान-प्रदान किया। उनके भाई के पौत्र सुब्बराम दीक्षितर ने 1904 में 'संगीत संप्रदाय प्रदर्शिनी' को संकलित और प्रकाशित किया जिसमें आरंभिक काल से 20वीं शताब्दी तक के संगीत और रागों को जोड़ा गया है। परिवार और शिष्य परंपरा ने उनके गीतों का प्रचार किया जो 21वीं शताब्दी में भी स्पंदनशील और जीवित हैं।

पवित्र नगर तिरुवरूर में भक्त माता पिता के यहां जन्म लेना, धर्म, संगीत और संस्कृत के ज्ञान की पृष्ठभूमि तथा विशेष दैवीय आशीर्वाद के पश्चात जन्म होने से प्रतीत होता है कि जन्म से ही वे त्रिमूर्ति से संबन्धित हैं। संत गुरुओं के शिष्य की भांति स्वीकृत, विशेष धार्मिक विद्या या नाम उपासना में दीक्षित, पूर्ण रूप से संगीत के माध्यम से आध्यात्मिक मार्ग के लिये समर्पित व शिष्यों और समकालीनों द्वारा सम्मानित होना वास्तव में एक आश्चर्यजनक कथा है। प्रत्येक को अपने अंत का पूर्वाभास था अत: अपने जीवन की तीर्थयात्रा धैर्यपूर्वक समाप्त की। इनके निवासों की मरम्मत करके भविष्य के लिये सुरक्षित किया गया है तथा इनकी स्मृति का प्रत्येक वर्ष संगीत उत्सवों के माध्यम से मनाया जाता है। श्यामा शास्त्री के गीत देवी पर हैं जबकि त्यागराज और दीक्षितर के गणेश से लेकर हनुमान तक के गीत हमारे धर्म और पौराणिक ज्ञान की वृद्धि करते हैं।

पाठगत प्रश्न 3.3

1. संगीत त्रिमूर्ति के नाम दीजिये।
2. श्यामा शास्त्री का प्रारंभिक नाम क्या है?
3. त्रिमूर्ति रचयिताओं में सबसे अधिक रचनाओं के प्रकार किसके हैं?
4. एक पवित्र स्थान के मंदिर पर गीतों के समूह का क्या नाम है?

3.4 स्वाति तिरुनल

स्वाति तिरुनल (1813-1847) त्रावणकोर की रानी लक्ष्मी बाई और राजराजा वर्मा कोईथमपुरण की दूसरी संतान थे। उनका 16 अप्रैल 1813 में 'स्वाति' नक्षत्र में जन्म हुआ। उनकी बड़ी बहन रुक्मणी बाई और छोटा भाई मर्तंड वर्मा थे जिनके जन्म के पश्चात उनकी माता की मृत्यु हो गई। 1929 में उनके राज्य के शासक के रूप में भार संभालने तक उनकी मां की छोटी बहन गौरी पार्वती बाई ने राज्य तथा बच्चों का शासक रानी की भांति पालन किया। उनकी मौसी और पिता ने उन्हें भली भांति शिक्षित किया। सात वर्ष की आयु तक उन्होंने तमिल, संस्कृत और अंग्रेजी

तथा बाद में कन्नड़, तेलुगु, हिंदी, मराठी और कई अन्य भाषाओं में निपुणता प्राप्त की।

सुब्रमण्य भगवतर और पद्मनाभ भगवतर से उन्होंने संगीत सीखना आरंभ किया और कई महान संगीतज्ञों जैसे तंजौर कौर्टेट, महाराष्ट्र गायक, शदकल गोविंद मरार और त्यागराज तथा दीक्षितर के कई शिष्य जो उनके दरबार में गाते थे, उन्हें सुना, उनसे सीखा और प्रभावित हुए। ईस्ट इंडिआ कंपनी के साथ संपर्क ने उन्हें अपने राज्य का आधुनिकरण करने के लिये प्रेरित किया। उन्होंने वेधशाला, संग्रहालय, चिड़िया घर, प्रेस, पुस्तकालय और एक अंग्रेजी विद्यालय (अब विश्वविद्यालयी कौलेज) आरंभ किये। उन्होंने कानूनी सुधार किये, भूमि निरीक्षण के लिये न्यायालय स्थापित किये, 1836 में पहली बार राज्य में जनगणना की, एलोपैथिक डाक्टरों के साथ अस्पतालों की स्थापना की, इंजीनियरों का विभाग आरंभ किया और महिलाओं के लिये सामाजिक सुधार किये। उनकी मौसी तथा पालक माता ने उन्हें विभिन्न क्षेत्रों में ज्ञान की वृद्धि के लिये प्रोत्साहित किया। निकट परिवार में से उनके भाई मर्तंड वर्मा ने उनके बाद 1846 से 1860 तक शासन किया।

अपनी पत्नी की मृत्यु के पश्चात स्वाति तिरुनल ने एक गायक और वीणा वादक, लक्ष्मी से विवाह किया। दूसरी पत्नी के पुत्र हुआ और उसकी बहन ने शासक के भाई से विवाह किया। तीसरी पत्नी के साथ उनके संबंध अच्छे नहीं थे, पारिवारिक मतभेदों का मद्रास उच्च न्यायालय में निवारण हुआ। स्वाति तिरुनल केरल के त्रावणकोर राज्य के कुलशेखर वंश से संबंधित थे। उनके कई महल तथा ऐश्वर्य होते हुए भी वे एक विनम्र भक्त थे। वे स्वयं को भगवान पद्मनाभ को समर्पित राज्य को चलाने वाला सेवक मानते थे। इस प्रकार उनकी कृतियों मां वे भगवान पद्मनाभद्ध या उनके पर्याय की मुद्रा काम में लेते हैं और भगवाण विष्णु की महत्ता का वर्णन करते हैं। 32 वर्ष की अल्प आयु में उन्होंने सैंकड़ों गीत न केवल संस्कृत और मनिप्रवल, अपितु कई अन्य भाषाओं में भी लिखे। उनकी रचनाओं में दो संगीत ओपेरा, वर्णम्, कृति, स्वरजाति, पदम्, जावली, हिंदुस्तानी ध्रुपद, ख्याल, टप्पा, ठुमरी और भजन सम्मिलित हैं। उनका दरबार संगीत और संगीतज्ञों से भरपूर था और उनके नवरात्रि कीर्तनों से लेकर उनके स्पंदनशील हिंदी तिल्लाना तक उनकी रचनायें कर्नाटक कोष का एक महत्त्वपूर्ण भाग हैं।

पाठगत प्रश्न 3.4

1. रामा वर्मा स्वाति तिरुनल के नाम से कैसे प्रसिद्ध थे?
2. उन्होंने अपनी कृतियों में नामाक्षर की भांति किस मुद्रा का प्रयोग किया है?
3. इनकी मुद्रा क्या है?

टिप्पणी

आपने क्या सीखा

इस अध्याय में हमने कुछ महत्त्वपूर्ण कर्नाटक रचयिताओं के विषय में सीखा है। पुरंदर दास, एक धनाढ्य कृपण, परिवर्तित होकर एक महान भक्त बन जाते हैं। स्वाति तिरुनल ने एक राजकुमार की भांति जन्म लिया परंतु अपनी सरलता तथा भक्ति और संगीत के प्रति समर्पण के लिये जाने जाते हैं। उन्होंने अपने सारे धन का प्रयोग प्रजा की भलाई के लिये किया। महान भक्त रामदास ने सारा धन जो उन्हें सौंपा गया था उसे धार्मिक इमारतों को सुधारने के काम में लिया। त्यागराज एक धार्मिक भ्रमण करने वाले गायक की भांति दान मांगते थे जैसे पुरंदर दास ने परिवर्तन के पश्चात किया। श्यामा शास्त्री और दीक्षितर को धन की कोई चिंता नहीं थी और उन्होंने अपनी पूर्ण शक्ति ईश्वर की सेवा में लगा दी। उन्होंने अपना संपूर्ण ज्ञान, धन और संगीतात्मक उपलब्धि ईश्वर की प्रशंसा के लिये काम में ली। उनकी रचनायें गान और भक्ति के रस के उदाहरण हैं जो यह दिखाते हैं कि संगीत और भक्ति इस पृथ्वी पर सबसे बड़ा धन है।

पाठांत अभ्यास

1. एक अच्छे कर्नाटक संगीत रचयिता के लिये आवश्यक गुणों पर संक्षिप्त निबन्ध लिखिये।
2. कर्नाटक रचयिताओं को अपने साहित्य को संपन्न बनाने के लिये महाकाव्य, पुराण और अन्य संदर्भ सामग्री से प्राप्त उपयोगी ज्ञान के विषय में संक्षेप में विवरण दीजिये।
3. यद्यपि वह एक महान गायक न भी हो, एक रचयिता के लिये संगीत और पद मिलाने तथा उपयुक्त राग में बद्ध करने के लिये किन गुणों की आवश्यकता है?
4. दीक्षितर की ङ्कङ्क ख्रतियों के साहित्यिक सौंदर्य और अलंकरण के कुछ उदाहरणों के नाम दीजिये।

शब्दावली

1. वाग्गेयकार– शब्द और संगीत का रचयिता
2. मातु– गीत का साहित्य या पद
3. धातु– संगीत
4. मुद्रा– वह शब्द जो रचयिता का नाम या धार्मिक स्थान या राग जो पद में बुद्धिमत्तापूर्ण रूप से बताया गया है।

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

3.1

1. श्रीनिवास नायक

2. देवरनं
3. कन्नड़
4. पुरंदर विठ्ठल

3.2

1. तेलुगु
2. रामा
3. भद्रचलं

3.3

1. श्यामाशास्त्री, त्यागराज, मुत्तुस्वामी दीक्षितर
2. व्यंकटसुब्रमणियं
3. श्यामाशास्त्री
4. क्षेत्र कृतियां

3.4

1. उनके जन्म नक्षत्र स्वाति के कारण
2. पद्मनाभद्ध या पर्यायऋ
3. पद्मनाभ

निर्देशित कार्य कलाप

1. त्रिमूर्ति की और अधिक रचनाओं को औडियो सी डी या कैसेट अथवा सभा संगीत को सुनकर सीखिये।
2. शास्त्रीय त्रिमूर्ति द्वारा संगीत के प्रयोग का तुलनात्मक अध्ययन कीजिये।